2 हम भी बनें महान

सीधे-सादे कार्य एवं घटनाओं में कर्तव्यपालन, प्रामाणिकता, मानवता, अविरत अभ्यास आदि तत्त्व जुड़ने पर कार्य और कर्ता दोनों की गरिमा और महिमा बढ़ जाती है।

प्रस्तुत इकाई में स्वामी विवेकानंद, गोपालकृष्ण गोखले, सचिन तेंदुलकर और हजरत अली के जीवन से जुड़े कुछ प्रसंग दिए गए हैं; जिनमें उनकी महानता के कुछ बुनियादी गुण दृष्टव्य होते हैं। यही गुण हमारे जीवन के लिए प्रेरणा-पीयूष हैं। ऐसे गुणों को अपनाकर हम भी महान बन सकते हैं।

कर्तव्य

मेले में सब खिलौने ले रहे थे, तब नरेन्द्र नामक एक लड़के ने दो रुपए का एक शिवलिंग खरीदा। अब भी उसके पास एक चवन्नी बची थी। एक लड़के को रोते देखकर नरेन्द्र ने उससे पूछा – ''क्यों रो रहा है?'' लड़के ने कहा, ''मेरे पास एक चवन्नी थी; कहीं गिर गई। अब मेरी माँ मुझे बहुत पीटेगी।''

''कोई बात नहीं, यह लो चवन्नी।'' कहकर नरेन्द्र ने अपनी चवन्नी उसे दे दी और आगे बढ़ गया।

अभी नरेन्द्र कुछ दूर ही गया था कि सामने से एक मोटर आती दिखाई दी। एक छोटा-सा बच्चा उस मोटर से बिलकुल बेखबर चला जा रहा था। नरेन्द्र ने झपटकर उस बालक को खींच लिया। एक पल की देरी होती तो वह बालक मोटर के नीचे आ जाता। इस झपटने की क्रिया में नरेन्द्र के हाथ से शिवलिंग छूटकर गिर गया और टूट गया। इस दौरान इकट्ठे हुए लोगों में से किसी ने कहा, ''बेचारे का नुकसान हो गया, कितने चाव से खरीदा था शिवलिंग।'' यह सुनते ही नरेन्द्र ने कहा, ''इससे क्या? इस बालक की जान बचाना मेरा पहला कर्तव्य है।''

वस्तु से भी व्यक्ति का जीवन ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। मानवता सबसे ऊपर है। बचपन से ही ऐसे ख़यालात रखनेवाला नरेन्द्र आगे चलकर स्वामी विवेकानंद के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

◆

नियम सबके लिए है

बात सन् 1885 की है। पूना के न्यू इंग्लिश हाईस्कूल में समारोह हो रहा था। प्रमुख-द्वार पर एक स्वयंसेवक नियुक्त था, जिसे यह कर्तव्य-भार दिया गया था कि आनेवाले अतिथियों के निमंत्रण-पत्र देखकर

उन्हें सभा–स्थल पर यथा–स्थान बिठा दे। उस समारोह के मुख्य–अतिथि थे मुख्य न्यायाधीश महादेव गोविंद रानडे। जैसे ही वह विद्यालय के द्वार पर पहुँचे, वैसे ही स्वयंसेवक ने उन्हें अंदर जाने से शालीनतापूर्वक रोक दिया और निमंत्रण–पत्र की माँग की।

''बेटा, मेरे पास तो निमंत्रण–पत्र नहीं है।'' रानडे ने कहा।

''क्षमा करें, तब आप अंदर प्रवेश न कर सकेंगे।'' स्वयंसेवक का नम्रतापूर्ण उत्तर था।

द्वार पर रानडे को देखकर स्वागत–समिति के कई सदस्य आ गए और उन्हें मंच की ओर ले जाने का प्रयास करने लगे। पर स्वयंसेवक ने आगे बढ़कर कहा, ''श्रीमान, मेरे कार्य में यदि स्वागत–समिति के सदस्य ही रोड़ा अटकाएँगे तो फिर मैं अपना कर्तव्य कैसे निभा सकूँगा? कोई भी अतिथि हो, उसके पास निमंत्रण–पत्र होना ही चाहिए। भेद–भाव की नीति मुझसे नहीं बरती जाएगी।''

यह स्वयंसेवक आगे चलकर गोपाल कृष्ण गोखले के नाम से प्रसिद्ध हुआ और देश की बड़ी सेवा की।

◆

सफलता का रहस्य

''अंडर फोर्टीन क्रिकेट टीम'' के कप्तान के रूप में एक लड़का अपनी टीम के साथ क्रिकेट मैच खेलने के लिए अहमदाबाद में आया था। उसकी टीम फाईव स्टार होटल में ठहरी थी। सुबह उठते ही पूरी टीम कोच–मैनेजर के साथ अल्पाहार के लिए तैयार थी। एक मात्र कप्तान नहीं दिखाई दे रहा था। उसे ढूँढ़ने के लिए पूरी टीम लग गई, पर वह नहीं मिला। बाद में किसी ने जाकर उसके कमरे की गैलरी में देखा तो वह एक हाथ से गेंद फैंक रहा था और ज्यों ही गेंद दीवार से टकराकर वापस आती थी, तो दूसरे हाथ से बल्ले से गेंद को खेल रहा था। साथी खिलाड़ी टीम में शामिल होने पर ही संतुष्ट थे, लेकिन वह कप्तान होकर भी सारी रात अपने आप अभ्यास करता रहा। उसका अभ्यास एवं क्रिकेट के प्रति लगाव देखकर कोच–मैनेजर और सभी साथी खिलाड़ी दंग रह गए।

आगे चलकर इसी लड़के ने क्रिकेट–जगत में अद्वितीय सफलता प्राप्त की। कई विश्व–रिकार्ड उसके कदम चूमने लगे। किसी ने उसकी सफलता का रहस्य पूछा तो बड़ी विनम्रता से उत्तर दिया कि – ''मैं हर मैच तीन बार खेलता हूँ। पहले अभ्यास के रूप में, दूसरी बार सचमुच मैदान में तथापि मैच के बाद मूल्यांकन व सुधार–आवश्यकता के रूप में।''

यह लड़का कोई और नहीं क्रिकेट की दुनिया में सफलता के नित नए कीर्तिमान स्थापित करनेवाला हमारा सचिन रमेश तेंदुलकर है।

सचमुच एकाग्रता, अविरत अभ्यास, कठोर परिश्रम एवं लगन ही सफलता के आधार हैं।

◆

प्रामाणिकता

एक दिन हजरत अली राज के ख़ज़ाने की जाँच करने गये। काम करते-करते अँधेरा हो गया। मोमबत्ती जलाई गई।

थोड़ी देर बाद दो सरदार अपने निजी काम के लिए उनके पास आये। हजरत अली ने उन्हें बैठने के लिए कहा। हिसाब की जाँच-पड़ताल पूरी हुई। हजरत ने मोमबत्ती बुझा दी और मेज़ के खाने में से दूसरी मोमबत्ती निकाल कर जला ली।

सरदारों को यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ। हजरत अली ने एक मोमबत्ती बुझाकर दूसरी क्यों जलाई, यह सरदार न समझ सके। एक सरदार ने बड़ी नम्रता से हजरत अली से पूछा।

हजरत अली बोले, ''भाई, अब तक मैं राजकाज का काम करता था, इसलिए राज की मोमबत्ती जला रखी थी। अब निजी काम शुरू हुआ है। इसलिए मैंने अपनी मोमबत्ती जला ली, नहीं तो मैं चोर या हरामखोर कहलाता। हर एक आदमी को चोरी और हरामखोरी से बचकर चलना चाहिए। चाहे वह अमीर हो या फ़क़ीर।''

देखने में तो यह बात बहुत छोटी-सी लगती है, पर है बड़े महत्त्व की। अब हम आज़ाद हो गये हैं। राज काज का काम तभी अच्छी तरह से चल सकता है, जब लोगों में इस तरह की प्रामाणिकता हो।

हमारे पुरखों ने कहा है : ''मा गृधः कस्यस्विद्धनम्'' – ''किसी के धन-माल की लालसा मत करो। यह मनुष्य के लिए सबसे बड़ी सीख है।''

शब्दार्थ

नुकसान हानि **खयाल** विचार **स्वयंसेवक** अपने आप सेवा करनेवाला **नियुक्त** काम पर लगाया हुआ **कर्तव्य-भार** उचित काम की जिम्मेदारी **प्रयास** प्रयत्न **सदस्य** सभासद **भेदभाव** व्यवहार में अंतर **प्रसिद्ध** विख्यात **अल्पाहार** नास्ता **रहस्य** गुप्तभेद **खजाना** धन-भंडार **जाँच** परीक्षण **हरामखोर** हराम का माल खानेवाला **अमीर** धनवान **पुरखा** पूर्वज

अभ्यास

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(1) बच्चे को बचाने में देरी होती तो क्या होता?

(2) 'दूसरों की जान बचाना' हमारा कर्तव्य है। आप और किन बातों को अपना कर्तव्य समझते हैं?

(3) मुख्य-अतिथि को द्वार पर ही रोक देना सही था? क्यों?

(4) आपको कहाँ-कहाँ पर भेद-भाव की नीतियाँ दिखाई देती हैं?

(5) सफल होने के लिए हमें क्या करना चाहिए?

(6) आप किसको प्रामाणिक इन्सान कहते हैं?

प्रश्न 2. आपने कोई घटना या प्रसंग सुना हो या पढ़ा हो, उसे कक्षा में कहिए। कक्षा में प्रस्तुत की गई घटना या प्रसंग में से किसी एक को अपनी भाषा में लिखिए।

प्रश्न 3. चर्चा कीजिए :

(1) यदि पक्षी बोल पाते तो पेड़ों की कटाई के विषय में वे आपसे क्या कहते?

(2) यदि धरती बोल पाती तो मनुष्य के बारे में ईश्वर से क्या शिकायत करती?

प्रश्न 4. निम्नलिखित परिच्छेद को पढ़िए और लिखिए :

किसी ने स्वामी विवेकानंद से पूछा, ''सब कुछ खोने पर भी मनुष्य के पास क्या होना जरूरी है?'' स्वामी विवेकानंद ने कहा, ''उस उम्मीद का होना जरूरी है, जिसके बलबूते पर हम खोया हुआ सब कुछ वापस पा सकते हैं।''

प्रश्न 5. निम्नलिखित परिच्छेदों में उचित विरामचिह्न लगाकर लिखिए :

[(।) (?) (!) (-) (' ') ('' '') (,), (;)]

(1) बात पुराने जमाने की है उन दिनों देवताओं और दानवों में युद्ध होता रहता था
दोनों पक्ष मिलकर एक बार प्रजापति के पास गए वहाँ जाकर बोले मान्यवर हम दोनों ही आपकी संतानें हैं बताइए कि हम दोनों में बड़ा कौन है

(2) समय वह संपत्ति है जो प्रत्येक मनुष्य को प्रगति की ओर ले जाती है जो लोग इस धन का उचित विनियोग करते हैं उन्हें शारीरिक सुख तथा आत्मिक आनन्द प्राप्त होता है इसी के द्वारा मूर्ख चतुर निर्धन धनवान और अज्ञानी ज्ञानी बन सकता है संतोष या सुख मनुष्य को तब तक प्राप्त नहीं होते जब तक वह उचित रीति से समय का उपयोग नहीं करता क्या तुम मानते हो कि समय नि:संदेह एक रत्न राशि है

स्वाध्याय

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्य में लिखिए :

(1) लड़के ने रोने का क्या कारण बताया?

(2) नरेन्द्र बड़ा होकर किस नाम से प्रसिद्ध हुआ?

(3) इस प्रसंग में नरेन्द्र में कौन-कौन से गुण नजर आते हैं?

(4) द्वार पर रानडे को देखकर स्वागत-समिति के सदस्यों ने क्या किया?

(5) अल्पाहार के समय कौन नहीं दिखाई दे रहा था?

(6) सफलता के क्या-क्या आधार हैं?

(7) हजरत अली ने एक मोमबत्ती बुझाकर दूसरी मोमबत्ती क्यों जलाई ?

(8) हमारे पुरखों ने क्या कहा है?

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(1) लोगों की बात सुनकर नरेन्द्र ने क्या कहा?

(2) रानडे को किसने रोका? क्यों?

(3) कोच, मैनेजर और साथी खिलाड़ी क्यों दंग रह गए?

(4) राज-काज का काम कैसे अच्छी तरह से चल सकता है?

प्रश्न 3. उचित विकल्प के सामने गोला '●' कीजिए :

(1) नरेन्द्र ने लड़के को क्या दिया?

○ अठन्नी ○ चवन्नी

○ शिवलिंग ○ रुपया

(2) समारोह के मुख्य अतिथि कौन थे?

○ हजरत अली ○ स्वामी विवेकानंद

○ गोपालकृष्ण गोखले ○ महादेव गोविन्द रानडे

(3) स्वयं-सेवक क्या देखकर, लोगों को यथा-स्थान ले जा रहा था?

○ निमंत्रण-पत्र ○ पहचान-पत्र

○ राशनकार्ड ○ ड्राइवींग लाइसन्स

(4) स्वागत-समिति के सदस्य रानडे को किस ओर ले जाने का प्रयास कर रहे थे?

○ विश्रामगृह ○ भोजनकक्ष

○ मंच ○ सभागृह

(5) किसे ढूँढ़ने के लिए पूरी टीम लग गई?

○ कोच ○ मैनेजर

○ कप्तान ○ डॉक्टर

प्रश्न 4. कोष्ठक में से शब्दों को चुनकर, समानार्थी शब्दों की जोड़ बनाइए और प्रत्येक शब्द का वाक्य में प्रयोग कीजिए :

• कामयाबी	• ख़याल	• नुकसान	• प्रसिद्ध
• जाँच	• अमीर	• परीक्षण	• हानि
• सफलता	• विख्यात	• विचार	• धनवान

भाषा-सज्जता

• **निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए :**

(1) राधा ने दो लीटर तेल मँगवाया है।

(2) किशन ने पचास ग्राम इलायची खरीदी।

(3) राहुल थोड़ी चीनी लेकर आया।

(4) पिताजी बाज़ार से कुछ सब्जियाँ लाए।

उपर्युक्त वाक्यों में 'दो लीटर', 'पचास ग्राम', 'थोड़ी', 'कुछ' शब्दों को रेखांकित किया गया है। ये शब्द नाप-तौल को दर्शाते हैं।

जो शब्द किसी वस्तु के नाप-तौल को दर्शाते हैं, उसे 'परिमाणवाचक विशेषण' कहते हैं।

• **निम्नलिखित वाक्यों में से 'परिमाणवाचक विशेषण' को छाँटकर [ ] में लिखिए :**

(1) दो मीटर कपड़ा दीजिए। [ ]

(2) दिनेश ने बहुत मिठाई खाई। [ ]

(3) राधा ने चाय में थोड़ा दूध डाला। [ ]

(4) मीना ने एक किलो हल्दी ली। [ ]

• **निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए :**

(1) मेरा काम पूरा हो गया।

(2) वह आदमी जा रहा है।

(3) यह घोड़ा है।

(4) मुझे कोई किताब दे दीजिए।

(5) वे कौन लोग थे?

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित शब्द – 'मेरा', 'वह', 'यह', 'कोई', 'कौन' – सर्वनाम हैं। ये शब्द संज्ञा की विशेषता दर्शाते हैं।

जब सर्वनाम किसी संज्ञा की विशेषता बताता है, तब उसे 'सार्वनामिक विशेषण' कहते हैं।

- **निम्नलिखित वाक्यों में से 'सार्वनामिक विशेषण' को अलग छाँटकर ☐ में लिखिए :**

(1) वे लड़के खेल रहे हैं। ☐

(2) तुम्हारा काम पूरा हो गया? ☐

(3) यह पेन्सिल हीरल की है। ☐

(4) वह लड़की पढ़ रही है। ☐

(5) सरला को कोई खिलौने दो। ☐

योग्यता विस्तार

- महापुरुषों के जीवन के प्रेरक-प्रसंग पढ़िए और प्रार्थना सभा में सुनाइए।
- 'आप में क्या-क्या खूबियाँ हैं और क्या-क्या कमियाँ?' अपने साथियों के जरिए जानिए और सूची बनाइए।
- महात्मा गाँधी, सरदार पटेल, रानी लक्ष्मीबाई आदि के जीवन पर आधारित फिल्म या धारावाहिक देखिए।

◆